THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.

BB—1971—263-145

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

LASWA

MICROFILM PROJECT MBB — 1)

3 263
p number

85
2. Source

CHANDOVAGA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

+ 880 = A.D.
which MS was copied
Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

PALM LEAVES
l (Palm leaf, etc.)

NEWARI
8. Script

cm. x 9 cm.

9
10. Lines to a page

24
r of leaves in complete

incomplete
12. Missing leaves

r and Date of composition
given)

14. Number of Chapters

) Short Critical Analysis of Kamas

rks

Sahasra.

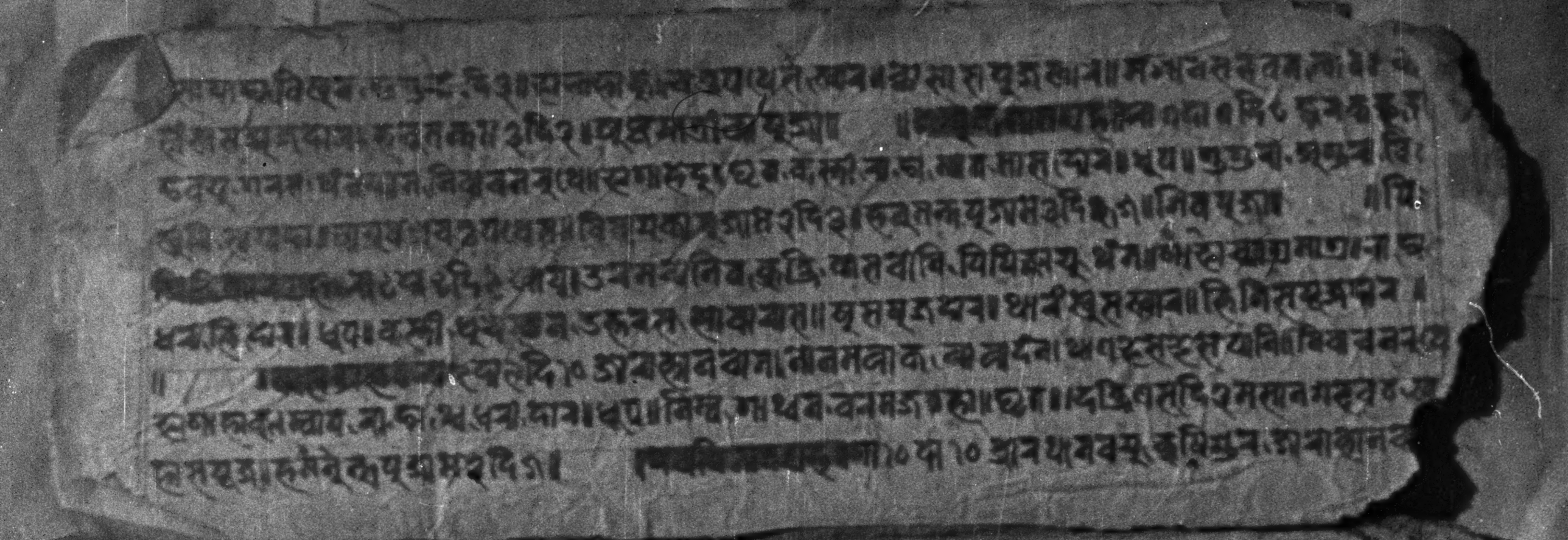

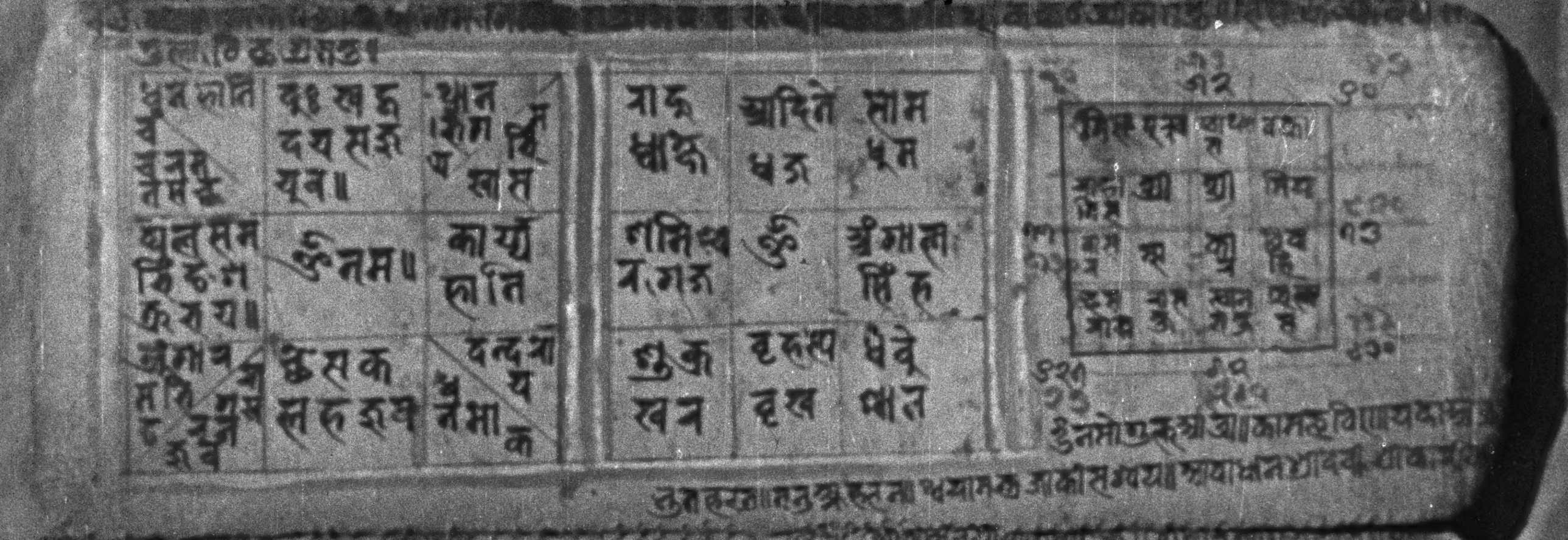

रवीमादि स्थिगतदूर्तं बुधशुक्रौ समीपगौ
जागतस्तु गुरुश्चन्द्रौ गतिमाद्रुतदृश्यतः॥
दूरस्थौ स्तब्धवक्रिणौ स्यातां तिक्ताश्रयौ॥
रवीमादि स्थस्य दूरं गतं बुधशुक्रस्य
समीपगते गुरुचन्द्रस्य शनेरागतं
तिमाद्रुस्य गतिर्दृश्यते॥ कुजो विधत्ते
गमनविक्षा॥ गतागतस्थस्थथा॥

किंतत्वया।नाकिंचनस्यप्रत्यर्थिनःस्वर्गेस्यःसामान्य॥ ॥दृष्टान्तेनसिद्धसाध्यविधर्म्यया।नतुकिंचदत्रार्थेस्वप्रज्ञाविकल्पया॥ ॥दृष्टान्तेनसाध्यसाधनविकलदृष्टा।प्रज्ञामविकल्पकत्वात्तस्याःप्रत्यक्षत्वेनाभ्रान्तत्वात्तस्यार्थेऽर्थप्रापकत्वमसिद्धमिति॥ ॥दृष्टान्तेनदृष्टसाधनविकलदृष्टा।यत्रार्थेविकल्पत्वाऽत्यक्षादिवत्॥ ॥दृष्टान्तेनसाध्यसाधनोभयविकलदृष्टा।धर्मिलक्षणसिद्धमिति।अर्थेऽर्थेविकल्पकल्पितेतत्॥ ॥दृष्टान्तेनाप्रसिद्धदृष्टा।यत्रदृश्याविकल्पेधर्मिलक्षणेप्रवृत्तसाक्षात्कारिज्ञानफलंसिद्धमिति॥ ॥दृष्टान्तेनाप्रसिद्धविशेषणदृष्टा॥सुखविवेकसमाधौऽर्थाविकल्पकार्थसंविदितिसाधनात्॥ ॥दृष्टान्तेनाप्रसिद्धविशेषणोभयदृष्टा॥विकल्पद्वयमृषौऽर्थाविकल्पकार्थसंविदितिसाधनात्॥ ॥दृष्टान्तेनाप्रसिद्धधर्मदृष्टा॥यत्कार्यंविकल्पत्वात्।फलरूपानर्थक्रियाऽनुपयोगित्वात्॥

स्वे

वा॥ ॥ थ्वहि स्वानन्ह म दृष्टा॥ चिन्हित स्त्री समागम॰ समागमन गेना हि॰ दृष्टि गुलि बनाकि सैमाय॰
॥ थ्वहि स्वान खन दृष्टा॥ शागान्ह चिन्हित या॥ प्रावी मथे विभू ली शागं॰ म फ्ल त न स्यमन्य द॥ ॥ थ्वहि
स्वान गजदृष्टा॥ चिन्हित स्वथ म स्ह्य॥ ल त्यन सरल कार्य॰ प्रवका ये विवि चिन्ही॥ ॥ थ्वाहं स्वान
थ्वद दृष्टा॥ चिन्हित॰ व्याधि मनर्क॰ यव न व्याधि नायाया॰ मनमा न्हनाव सैमाय॥ ॐ तिथिशमया
गयाआवाम्ह सायाप्त मफय [illegible] ॥ सर्वज्ञाय॥ स्यगीवड बाव॥ आकि स्तल॥
नागस्तल प्रवरूति॥ थ्वऊनयाग॥ मास राध्य पद॰ दिवस॰ प्रदिपदा॰ नवमी दिन पृथ्वी तला॰ पश्चि
श्चि॰ रूप॰ वमरू॰ नरूव॥ हस्तिका आसिवी॰ स॰ गजि न॥ नासि॰ म घट प॰ आदित्य त ऊाय भनाग॰ वायु द
व ताव ऊाद रूल॰ पर्वम ज्वाल ऊ व नाम दिनम॥ मिलदन॰ पिरू॰ नक॰ कंपन॰ त्यास का स॰ कुरु॰ दा

आ
दि
त्य

वज्र दंड

चक्रयीकृतयुकापरदाघयाचनिमङ्कङ्कजानयाद। कुष्टदवनाघकापपंचबालतपङ्गाभि
वपूजासूर्येऽोपेसनाघ०खतिमलाकालपूजापर्वसरवमङ्गऽकलीखसंपूऽस्नानयाम॥व्
याऽयाऽयाऽयाऽऽङ्कुङ्कुखधनसंहीनत्नागङ्कलस०ङ्कुकिनीयथीधलस०खाभ्रं। खालनयाग०व्
ऽऽलऽपूजा०यीथीकृवम०ङ्कऽऽऽटलास०पूजा०आगमसिद्ध॥ २ ॥नवविधि॥सवर्णचाक्षे
मासाधिकऽऽङ्कुआयुःमलघ्नयुःयद्धिवोगयनेऽकपूजय॥ नमःकङ्कायाय॥सामनऽऽ
यनत्याग॥खधिदवमाऽऽदा०आस्स०पूदव॥नग०आय०अतिलेसो०हृदय०कऽऽयीकृ०धिऽऽसी
वाऽस्खऽस्त्रीयाङ्कृतनयादवमासीमस्स०धिङ्कुघुला०ऽदा॥दिशा०आग्नेय॥मधु०अष्ट॥दिन
न०दिनियादशमीवलासप्यात०तङ्कृ०आज्ञा०यनर्द्धस०पय०ऽस्स॥त्रि॥सिधत०कऽऽटयामी

स्वमङ्गल्य पीथि सपूजा समाप्त सखल्व दवाल पलाश्च सवलि निधाय रक्षिती मयङ्ग्रा
गमसिद्धि ॥ अथ अग्निरक्षन यमद्दष्टा आगमवा गीतथाल्ल रुयादव ॥ धाकृयादव ॥ पिवा
लीस पातल्ल स्वमङ्गल्य ॥ याकस पूजा गवस्य पूजा कमलि पूजा आगमसिद्धि ॥ अथ अग्निरक्षनया
रुसद्दष्टा नका आल्ल पीत कुष्ठकङ्क ॥ चतुर्थ्यथ स्वछ किनी पवा दूज दशतन थेत वय कानवय
रक्षिनी पूजा कोमाली पूजा अथ मच्छ किनी पवा दूज रुगवलि पूजा याकमङ्गेय स्वप्नाग चूस
पूजा आगमसिद्धि ॥ ७ ॥ अथ अग्निरक्षन नागद्दष्टा नागकाय स्वाग कीथ यदयागा रुवट दूज पश्चिमस
छ किनी पवा दूज सलाकाल पूजा पीथि सखान गणेश पूजा कमाली पूजा पकलाय सर्पपूजा त्रयाए
स्वलि पूजा ॥ आगमसिद्धि ०० ॥ ८ ॥ अग्निरक्षन जीवद्दष्टा आगयाठ तेग दूज आल मिसाका सवाद रु

मया नारायण इदं मलालक्ष्मी पूजा कलाकमय मंगलमालिका पूजा गणेश पूजा ॥आगमर्षि
ऋषि ॥ ॐ अग्निस्कन्द अग्निर्देवा आगर्ववन्धिनि अग्निर्मे यज्ञास विधिक्रियाक कुलमालिकर्म
यजमाक अग्निमखाव लाभ यदत्व हिति मजेये गणेश पूजा ॥आगमर्षि ३७ ॥ ॐ अग्निस्कन्द
महादेव ॥आग खायवत यादव प्रेस्याक कक्ष कद रुद्रयामा नारायन तप पूजा कालयामा
नारायन वर्द्धमान रुद्रयामा नाथ दा ज्ञान ये धवस्कन्द महतवास याक कुलमालिवलि विधि मपूज
आगमर्षि ३७ ॥ ॐ अग्निस्कन्द अग्निर्देवा ॥आग नक यीरुपाप आत्र मिल कर्म कर्म मन्दव
नपात्र आय ॥ यवीयु सवा साम मल नधि पाणि रुद्र मल अत्र स्त्री यादव नाड ॥ गणेश पूजा
आगम पूजा पंचायतेदो यर्द्धमान मला काल नवर दुर्ग कुमारी रुद्रा नाट्यत्री पूजा मंगल

आकर्षितः स्तनमंडलः सगाढः यंत्रावाहनं विधाय वृत्वा एवं आवाहनं कृत्वा पद्मं धनमुद्रां प्रदर्श्य
रुवट इत्यादि खड्गं प्रदर्श्य ॥ आगच्छहि इत्यादि ॥ अथ तत्रविधिः ॥ अथ ध्यानमूलं लेखयेत् ॥ अथ
[illegible] ॥ उन्नतमंडलवक्षोजां ॥ अंगलग्नजायमानां ॥ दिव्याभरणभूषां ॥ मदमत्तां
सकटाक्षां दक्षकरेण हृदयमिव मदनशरसंगदवसपीडां सागतसंपीडां ॥ मधुघूर्णितलोचनां
चंद्रलावण्यविजयिनीं चतुर्दशीं ॥ मार्गे स्थितदक्षालयदेवतां विकचवामस्तनीं मदनकालदेवतां
प्रलयधनुरुद्यतपर्वसप्तमीं ॥ त्रासितरिपुं ॥ दिगदक्षिणदेशाधिपतां ॥ ऊर्ध्वकेशीं ऊर्ध्वकेशीं
आकर्णयंतीं ॥ अकर्णयंतीं ॥ अतिप्रलयरुद्रगजमदमत्तां रुद्रयंत्रदेवतां मदनमदां मदयंतीं ॥ आयतनयनि
भावयेत् ॥ दक्षमंत्रेण ॥ तत्रायं एकः ॥ ओं एकः सर्वमदनकालीं ॥ रुवट ॥ रुद्रमिति एकः ॥ वा

तद्दक्षा ॥ त्राम ॐ ग्रन्तवव व्याधि यादव शिव पूजा मङ्गलनाथ खात्र ऋग ऊर्ध्व संवि हि ॥ या० याचक यरुम
रूका रुनूमक यूत्रा ॥ याकस पदा कुमारीय ज्ञा ॥ १३ ॥ इति स्वयंवर नाम समाप्त ॥

[redacted] स्त्रीवरवाय ध्रुव आसि सर्व कार्य यत्रिकमनसिद्धि ॥ चिन्तय करपत्ता मरुपमाद
दवमाय वज्रयमद्दवत्ता संय दृष्टिसि ६ क्रमाय ॥ मक्रकाय पुत्रदामि देवमक्रियिस्वत ॥ [redacted]
पतय शक्तिधाराय मयूरवाहनाय ॐनमस्वाहा ॥ कत्रिशूलमखड्गा ॐनम खड्गाय सामायनमस्वाहा ॥ पद्मे ॥ ॐन
मस्त्रमायनमश्रीगजायनमस्वाहा ॥ आग्ने ॥ ॐनमस्तिक्षायवक्षयव भायनमस्वाहा ॥ वाया ॥ ॐनमो स्वानाय श्रादि
त्यनमस्वाहा ॥ नैमत्य ॐनमस्त्र वाय वे रूमस्वतिय नमस्वाहा ॥ पश्चिम ॥ ॐनमस्त्रखाय शानवत्रानमस्वाहा ॥ नि
सर्व ॐनमस्त्राय रुक्रयनमस्वाहा ॥ ऽरुत्र ॐनमस्त्रायनाऽवतुनमस्वाहा ॥ ॐ ग्रात [illegible] वाधिपतय रुन्द्रा

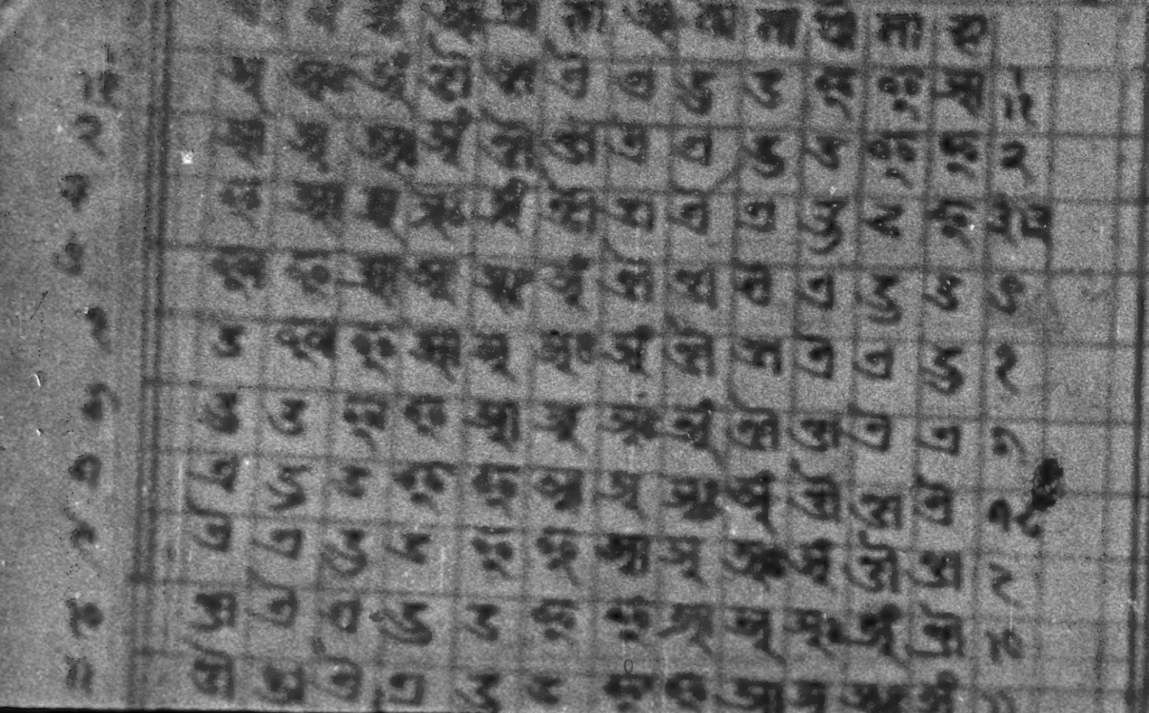

अक्षावदिनोद्रेन्द्रखमसर्वा॥यामद्यगर्कसखरू॥वानध्यौसौख्यं॥वावत्रसथखि॥ ॥
॥पूर्वेकदासा॥दक्षिनसख॥पश्चिमदुःखदा॥उकैवसदलासर्ख॥ ॥भूमिस्वत्रयागा॥ ॥ ॥
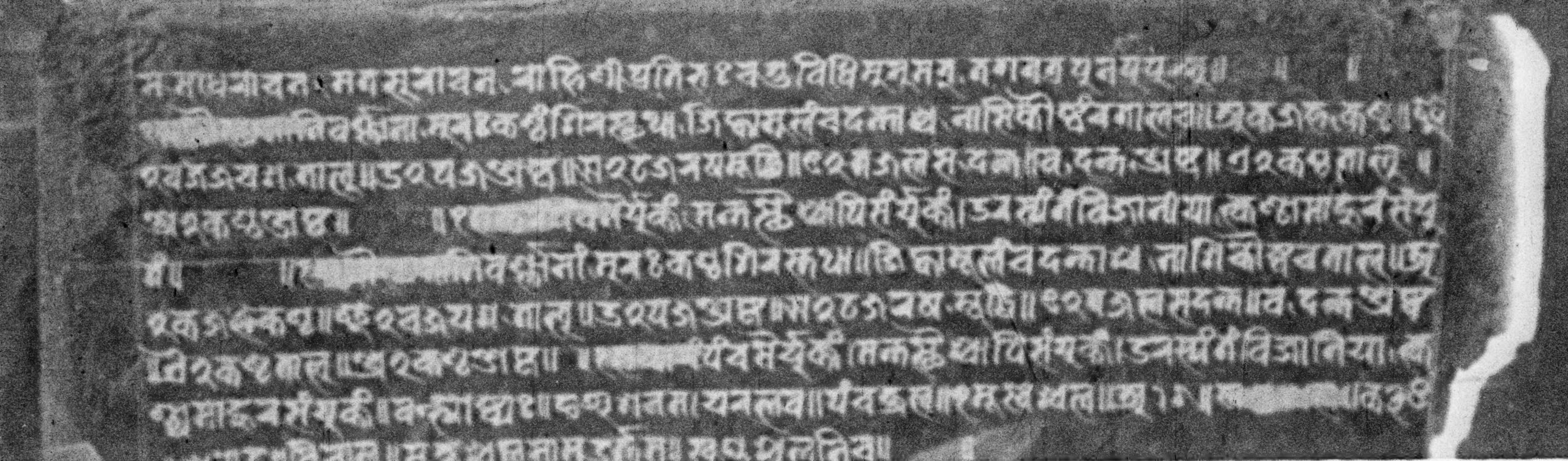
जप्तमस्त्रा॥सन्ध्यवत॥वर्वेपत्निमाहिमांय॥क्ष
वर्ङ्॥चक्रविंशमि.वामत्रस्त्रीपक्षामिमं.मदवापत्र॥ १ ॥॥ त्रयदुक्ष
लकायधसवदुःमस्त्रत्रासाङ्गेविनदृयनवाग्निसधमर्मलत्यत्र॥ २ ॥
॥खजनमस्त्रत्रा॥दर्ङ्॥दर्ङ्॥विसकविंशत्रवापत्र॥ ३ ॥॥ त्रय विमल मस्त्र
॥॥सपदुःवविचक्रालंनदृयत्र॥ ४ ॥॥ पश्चिमागेदेवा॥दक्षवा द
क्षियः॥भक्तवीरकलदुःमसख॥ १ ॥॥ पश्चिमास्त्रागवलोत्र.यः